परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष - 1948 से

" .....आने वाले दशकों में देशों की अर्थव्यवस्था एवं उद्योग में परमाणु ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका होगी, और यदि भारत संसार के औद्योगिक रूप से प्रगत देशों से अधिक पीछे नहीं रहना चाहता है तो यह आवश्यक होगा कि विज्ञान की इस शाखा को विकसित करने हेतु अधिक ऊर्जापूर्ण उपाय किये जाएँ ....."

-**होमी भाभा**, अध्यक्ष, पऊआ (1948-1966)

".....देशों ने अपने नागरिकों को अपने पास उपलब्ध संसाधनों के अंदर ही अग्रणी स्तर के अनुसंधान करने की सुविधाएं प्रदान करवानी चाहिए । अनुसंधान करने में सक्षम लोगों को तैयार करने के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि देश की व्यावहारिक समस्याओं के निदान हेतु कार्योन्मुख परियोजनाएं भी बनायी जाएं ...."

- **विक्रम साराभाई**, अध्यक्ष, पऊआ (1966-1971)

".....भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में रेडियोसक्रिय प्रबंधन ने यह सुनिश्चित करना जारी रखा है कि मानव और पर्यावरण को रेडियोसक्रियता के रिलीज से खतरा न हो..... जहां हमने व्यावहारिक वास्तविकता में ' यथासंभव कम डिस्चार्ज' के आधार पर काम किया है, वहीं हमारे आज के प्रयास पर्यावरण में होने वाले डिस्चार्ज को सीमित करने की परिकल्पना पर सक्रिय तरीके से केंद्रित हैं..."

- **एच. एन. सेठना**, अध्यक्ष, पऊआ (1972-1983)
आइएईए महासभा, 1975 में संबोधन

".....वर्ष 1985-86 हमारे परमाणु ऊर्जा कार्यक्रमों में कई उल्लेखनीय प्रगतियों का साक्षी रहा है। 18 अक्टूबर 1985 को स्वदेशी रूप से विकसित मिश्र कार्बाइड ईंधन वाले पहले स्वदेशी रूप से निर्मित FBTR ने क्रांतिकता हासिल की। FBTR की कमीशनिंग बहुत सहज रही । यह हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण घटना है, क्योंकि यह भारत के नाभिकीय कार्क्रम के द्वितीय चरण की शुरुआत है.... "

-**राजा रामन्ना,** अध्यक्ष, पऊआ (1983-1987)
आइएईए महासभा, 1985 में संबोधन

" .....परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद (एईआरबी) जिसे नियामक उद्देश्य हेतु समग्र उत्तरदायित्व सौंपा गया है, उसने अपने काम को व्यवस्थित तरीके से करना शुरू कर दिया है। परिषद के नाभिकीय चिकित्सा, औद्योगिक और परिवहन के क्षेत्रों में संहिता एवं मार्गदर्शिकाओं का निर्माणकार्य शुरू कर दिया गया है। सभी नाभिकीय संयंत्रों और अनुसंधान केंद्रों के इर्द-गिर्द पर्यावरणीय सर्वेक्षण किये गये..."

-**एम.आर. श्रीनिवासन**, अध्यक्ष, पऊआ (1987-1990)
आइएईए महासभा, 1986 में संबोधन

" भारत भी ऐसे छोटे रिएक्टर सप्लाइ कर सकता है जो विकासशील देशों में मानव-बल प्रशिक्षण के केंद्र बन सकें। भारत अब विकासशील देशों को कई न्यूक्लियर-संबंधित प्रौद्योगिकियाँ, रेडियोआइसोटोप उत्पादन और उपयोग, छोटे रिएक्टरों को स्थापित करने, और पुन:प्रसंस्करण जैसे प्रचालनों को लेने के लिये तैयार है, जो मानव-बल आधारित हैं, और इसलिये विकासशील देशों में अधिक किफायत से चलाए जा सकते हैं...."

-**पी.के. आयंगर**, अध्यक्ष, पऊआ (1990-1993)
आइएईए महासभा, 1990 में संबोधन

".....आने वाली सदी में, भारत में बिजली-सम्मिश्र का बढ़ता हुआ हिस्सा परमाणु ऊर्जा का ही होगा। पुन: प्रसंस्करण, अपशिष्ट प्रबंधन और प्लूटोनियम के पुनश्चक्रण की गंभीर प्रौद्योगिकियाँ प्रदर्शित की जा चुकी हैं, तथा उपलब्ध भी हैं। थोरियम- यूरेनियम 233 चक्र पर भी प्रगति हो रही है। इस प्रसंग में यह कहना बहुत उपयुक्त है कि संवृत्त नाभिकीय ईंधन चक्र में हमारी गहन रुचि के कारण हमने भुक्तशेष ईंधन को हमेशा एक महत्वपूर्ण संसाधन सामग्री समझा....."

- **आर .चिदंबरम**, अध्यक्ष, पऊआ (1993-2000)
आइएईए महासभा, 1999 में संबोधन

".....हमारे परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम, जो अपने 50 वें वर्ष में है, ने भारतीय जनता की सेवा में लंबा सफर तय किया है। आज हम एक मजबूत अनुसंधान एवं विकास, औद्योगिक एवं संरक्षा अवसंरचना के आधारयुक्त तेज गति की वृद्धि के मार्ग पर हैं। कुछ दिन पहले ही भारत सरकार ने 500 मे.वा. बिजली के पी.एफ.बी.आर. के निर्माण का अनुमोदन दिया है। इस स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकी की मदद से हमारे सीमित यूरेनियम संसाधनों से ही हम अपनी स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता को 3,00,000 मे.वा. से आगे तक बढ़ा सकते हैं....."

- **अनिल काकोड़कर**, अध्यक्ष, पऊआ (2000-2009)
आइएईए महासभा, 2003 में संबोधन

".....हमने आजतक जो भी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, वह आप सब के कठोर परिश्रम और समर्पण से ही संभव हो पायी हैं। मैं यह कहना चाहूंगा कि इस समग्र उत्कृष्टता को हासिल करने में हमारे वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासन एवं सहायक सभी वर्गों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है.....

आज हम देश में परमाणु ऊर्जा के बड़े पैमाने की वृद्धि की दहलीज पर हैं। जैसा कि आप सब को ही ज्ञात है कि परमाणु बिजली उत्पादन हेतु अंतरराष्ट्रीय सहयोग के दरवाजे खुलने लगे हैं। इस माहौल में, हम सभी के लिये यह जरूरी हो जाता है कि हम प्रौद्योगिकी एवं वाणिज्यिक व दोनों ही तरीके से अपने को प्रतियोगिता में बनाए रखें....."

- श्रीकुमार बैनर्जी, अध्यक्ष, पऊआ (2009-2012)
बीएआरसी संस्थापक दिवस, 2008 में संबोधन

परमाणु ऊर्जा विभाग का मैंडेट है; परमाणु ऊर्जा और इससे जुड़े लाभों को ऊर्जा सुरक्षा, खाद्यान्न सुरक्षा,जल-सुरक्षा,राष्ट्रीय सुरक्षा और देश को स्वास्थ्य देख-रेख सेवा प्रदान करने हेतु उपयोग करें। इस राह पर चलते हुए देश के आधुनिकतम अनुसंधान क्षेत्रों एवं उन क्षेत्रों में जो हमारे देश की विकास संबंधी जरूरतों के लिए संगत हैं, को आगे बढ़ाने हेतु अनुसंधान, विकास और प्रदायन की एक बड़ी रेंज स्थापित कर ली गयी है। विभाग इसको दिये गए मैंडेट को पूरा करने के लिये प्रगति के मार्ग पर चलने के साथ-साथ नई सोच को सुपुष्ट करता रहेगा।

- रतन कुमार सिन्हा, अध्यक्ष, पऊआ (2012--)

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस, 11 मई 2012 के अवसर पर संदेश